Journal Homepage: www.ijarpr.com ISSN: 3049-0103 (Online)

International Journal of Advance Research Publication and Reviews

Vol 03, Issue 8, pp 450-454, August, 2026

जोहारी शौकाओं में प्रवास के कारण: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

Kamlesh Chandra Pandey[1], Prof. Jyoti Joshi[2]

[1]Research Scholar, Department of Sociology, Kumaun University, Nainital

[2]Department of Sociology, Kumaun University, Nainital

सारांश:

प्रस्तुत शोध-पत्र का मुख्य उद्देश्य प्रवासित जोहारी शौकाओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना तथा उनके बाह्य प्रवास (Out-migration) एवं हल्द्वानी नगर की ओर अंतःप्रवास (In-migration) के प्रमुख कारणों को जानना है। प्रस्तुत शोध-पत्र में प्रवासित जोहारी शौकाओं में बाह्य प्रवास एवं अंतःप्रवास के कारणों को जानने के लिए अन्वेषणात्मक शोध अभिकल्प का प्रयोग किया गया है तथा एवर्ट ली के प्रतिकर्ष एवं अपकर्ष सिद्धांत (Push and Pull Theory) को सैद्धांतिक आधार के रूप में अपनाया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जोहारी शौकाओं के अपने मूल निवास क्षेत्रों से बाह्य प्रवास का प्रमुख कारण तिब्बत के साथ पारंपरिक व्यापार की समाप्ति से उत्पन्न आर्थिक संकट रहा है। इसके अतिरिक्त, जमींदारी उन्मूलन ने भी उनकी पारंपरिक अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया। वहीं, हल्द्वानी नगर में उपलब्ध रोजगार के अवसर उनके अंतःप्रवास के प्रमुख अपकर्ष कारक (Pull Factor) हैं। इस प्रकार, मूल निवास क्षेत्र में पारंपरिक आजीविका के साधनों के कमजोर होने तथा हल्द्वानी में रोजगार के अवसरों की उपलब्धता ने जोहारी शौकाओं के बाह्य प्रवास एवं अंतःप्रवास दोनों को प्रभावित किया है।

मुख्य शब्द: प्रवास, जोहारी शौका, जनजातीय समुदाय, भोटिया जनजाति

प्रस्तावना

प्रवास एक सामाजिक प्रक्रिया है, जो विभिन्न समयों में भिन्न-भिन्न कारणों से प्रेरित होती रही है। जहां आदिकाल में आदिमानव आखेट एवं आश्रय की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान पर गमन करते थे, वहीं खानाबदोशी चरण में समुदाय अपने मवेशियों के लिए चरागाहों की खोज में निरंतर स्थानांतरित होते थे। यद्यपि स्थायी कृषि व्यवस्था के विकास ने प्रवास के स्वरूप में परिवर्तन किया, जिससे व्यापक स्तर पर होने वाला प्रवास अपेक्षाकृत सीमित हो गया, फिर भी उपजाऊ भूमि की खोज तथा आक्रमणों के फलस्वरूप प्रवास की प्रक्रिया निरंतर गतिशील रही। तदुपरांत, मध्ययुग तक प्रवास विशिष्ट वर्गों तक सीमित हो गया, जैसे व्यापारी, कारीगर तथा धर्मप्रचारक, जो उन्नत अवसरों हेतु प्रवास करते थे।[1] इसके पश्चात औपनिवेशिक शासनकाल में भारत में जनजातीय प्रवास के स्वरूप में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आया। जहां ब्रिटिश प्रशासन ने कपास, चाय तथा जूट जैसी फसलों के बागानों में कार्य करने के लिए मुख्यतया जनजातीय श्रमिकों की नियुक्ति की,[2] क्योंकि इन्हें सस्ते श्रमिक माना जाता था, जिसके फलस्वरूप जनजातीय श्रमिकों को बागानों में कार्य करने हेतु अपने मूल निवास स्थानों से बाह्य प्रवास करना पड़ा।[3] इस प्रकार जनजातीय बाह्य प्रवास की शुरुआत ब्रिटिश नीतियों से हुई, वहीं वर्तमान समय में प्रवास किसी एक कारण का परिणाम न होकर अनेक जटिल अंतःक्रियाओं से संचालित होने वाली प्रक्रिया बन चुका है, जिसके फलस्वरूप लगभग 35 लाख जनजातीय जनसंख्या अपने मूल निवास क्षेत्रों से बाहर निवास कर रही हैं [4] तथा इनके बाह्य प्रवास के कारणों का अध्ययन अनेक विद्वानों द्वारा किया गया है। इसी संदर्भ में मिनिस्ट्री ऑफ ट्राइबल अफेयर्स एवं दिशा फाउंडेशन (2020) ने भारत के विभिन्न जनजातियों के बाह्य प्रवास के कारणों की पहचान की, जिसमें यह स्पष्ट हुआ है कि जनजातीय आबादी का वर्षा-आधारित कृषि पर निर्भर होना, न्यूनतम मजदूरी दर, मनरेगा जैसी योजनाओं के प्रति जागरूकता का अभाव, जनजातीय समुदायों के प्रकृति-प्रदत्त उत्पादों को बिचौलियों द्वारा कम मूल्य पर खरीदना तथा मद्यपान इत्यादि प्रमुख कारण हैं, जो जनजातीय समुदायों को अपने मूल निवास स्थानों से बाह्य प्रवास करने के लिए प्रेरित करते हैं।[5] इसी संदर्भ में प्रस्तुत शोध-पत्र में प्रवासित जोहारी शौका जनजाति में बाह्य प्रवास के कारणों को जानने का प्रयास किया गया है। विभिन्न शोध साहित्यों से ज्ञात होता है, कि जोहारी शौका जनजाति में मौसमी प्रवास की व्यवस्था प्रचलित रही है, जिसके अंतर्गत शीत ऋतु के आरम्भ होते ही वे अपने मूल ग्रामों से निचले क्षेत्रों के ग्रामों की ओर स्थानांतरित हो जाते हैं, तथा ग्रीष्म ऋतु के आगमन पर पुनः अपने उच्च हिमालयी मूल निवास ग्रामों में लौट आते हैं। लेकिन वर्तमान समय में इस मौसमी प्रवास के अतिरिक्त एक नई प्रवास प्रवृत्ति उभरकर सामने आई है, जिसके अंतर्गत कुछ जोहारी शौका अपने मूल पर्वतीय ग्रामों से बाह्य प्रवास कर नैनीताल जनपद के हल्द्वानी शहर में स्थायी रूप से निवासरत हैं। अतः प्रवासित जोहारी शौका जनजाति की इस नई प्रवास प्रवृत्ति ने यह जानने की जिज्ञासा उत्पन्न की है कि वे कौन-कौन से प्रतिकर्ष कारक (Push factor) थे, जिन्होंने उन्हें अपने मूल निवास स्थानों से बाह्य प्रवास के लिए प्रेरित किया, तथा वे कौन-कौन से अपकर्ष कारक (Pull factor) हैं, जिन्होंने उन्हें हल्द्वानी नगर की ओर अंतःप्रवास (In-migration) के लिए आकर्षित किया है।

प्रस्तुत शोध-पत्र में प्रवासित जोहारी शौका जनजाति में प्रवास के कारणों का अध्ययन एवर्ट ली के प्रतिकर्ष एवं अपकर्ष सिद्धांत (Push and Pull Theory) के आधार पर किया गया है। ली ने प्रवास के कारणों को दो श्रेणियों - प्रतिकर्ष तथा अपकर्ष कारकों में विभक्त किया है। प्रतिकर्ष कारक (Push factor) वे परिस्थितियाँ हैं, जो व्यक्तियों को अपने मूल निवास स्थान को छोड़ने के लिए प्रेरित करती हैं, जैसे रोजगार का अभाव, मूलभूत सुविधाओं का अभाव तथा प्राकृतिक आपदाएँ। इसके विपरीत, अपकर्ष कारक वे परिस्थितियाँ हैं, जो व्यक्तियों को अन्य स्थानों की ओर आकर्षित करती हैं, जैसे बेहतर रोजगार के अवसर, उच्च स्तरीय शिक्षा एवं बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ इत्यादि।[6] अतः इसी सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य के आधार पर इस शोध-पत्र में प्रवासित जोहारी शौका जनजाति के बाह्य प्रवास एवं अंत: प्रवास के कारणों को प्रतिकर्ष एवं अपकर्ष सिद्धांत के आधार पर विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

चित्र 1. जोहारी शौका समुदाय के मूल निवास ग्रामों का विवरण

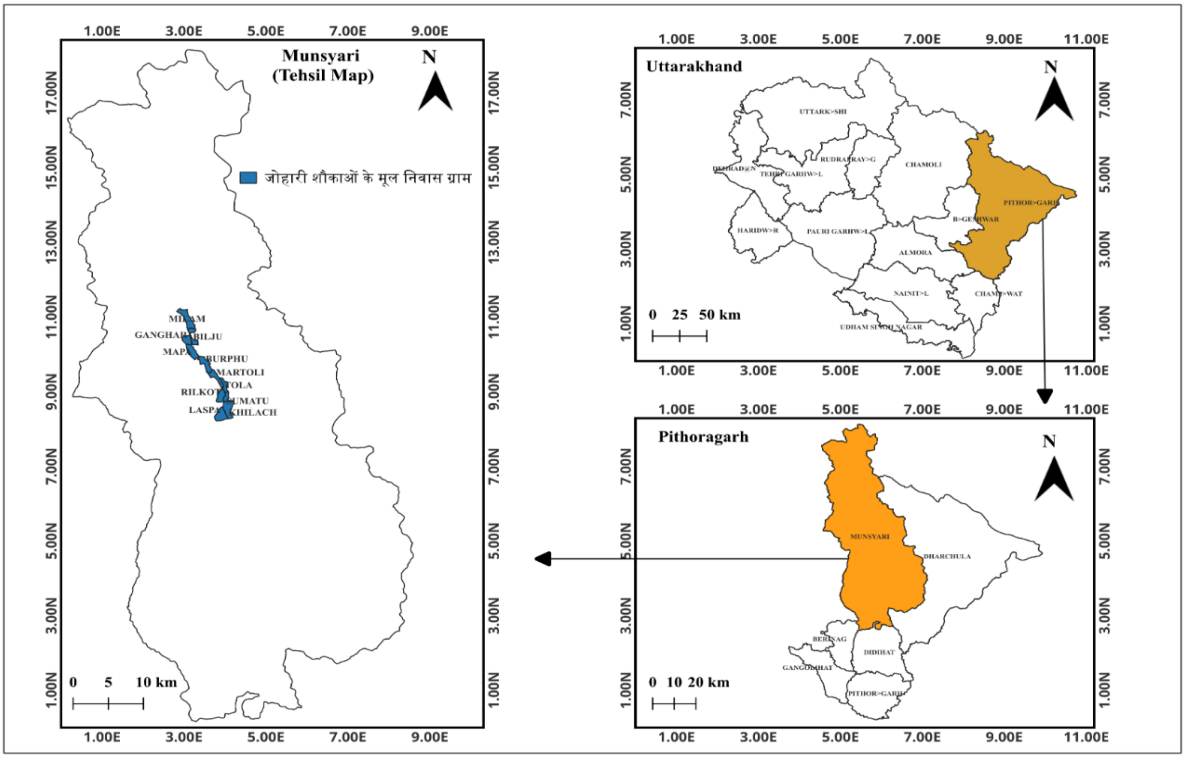

स्रोत: Survey of India एवं शोधार्थी द्वारा QGIS (Version 3.44) की सहायता से निर्मित।

साहित्य पुनरावलोकन

जनजातियों के बाह्य प्रवास के कारणों को जानने हेतु विश्व के विभिन्न भागों में निवासरत जनजातियों पर समय-समय पर अध्ययन किए गए हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख अध्ययनों का उल्लेख करना यहाँ प्रासंगिक प्रतीत होता है।

इस संदर्भ में **रीड (1942)** ने अपने अध्ययन में अफ्रीकी जनजातीय समुदायों में श्रम प्रवास की पृष्ठभूमि तथा उसके सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण किया है। अध्ययन में स्पष्ट किया गया है कि अफ्रीका में प्रवास का प्रमुख कारण यूरोपीय औपनिवेशिक शासन के दौरान खनन, बागानों तथा औद्योगिक क्षेत्रों में श्रमिकों की बढ़ती मांग थी, जिसके कारण बड़ी संख्या में जनजातीय पुरुष अपने गाँव छोड़कर श्रम केंद्रों की ओर प्रवास करने लगे। साथ ही भूमि की उर्वरता में कमी, प्रतिकूल जलवायु तथा बेहतर जीवन-निर्वाह के अवसरों की खोज भी जनजातीय समुदायों के प्रवास के महत्त्वपूर्ण कारण रहे हैं।[7]

इसी क्रम में **दिशा फाउंडेशन एवं ट्राइबल डेवलपमेंट (2014)** ने महाराष्ट्र के नासिक जिले के पेठ एवं त्र्यंबकेश्वर क्षेत्र की जनजातियों के प्रवास का अध्ययन किया, जिसमें पाया गया कि जनजातीय प्रवास मुख्यतः आर्थिक कारणों से प्रेरित है। स्थानीय स्तर पर रोजगार एवं आय के अवसरों का अभाव प्रवास का सबसे प्रमुख कारण पाया गया, जबकि गरीबी, भूमिहीनता, अधिक आय की आकांक्षा तथा कृषि योग्य भूमि की कमी भी प्रमुख कारणों के रूप में सामने आए हैं।[8] इसी क्रम में **बेंज (2014)** के अनुसार, 1962 के भारत-चीन युद्ध के बाद भारत-तिब्बत सीमा बंद हो गई, जिससे सदियों पुराना भारत-तिब्बत व्यापार पूर्णतः समाप्त हो गया। इस व्यापार के बंद होने से जोहारी शौका समुदाय की पारंपरिक आजीविका समाप्त हो गई और उन्हें अपने मूल उच्च हिमालयी गांवों से स्थायी रूप से हल्द्वानी, पिथौरागढ़ एवं अन्य मैदानी नगरों की ओर प्रवास करना पड़ा। इस प्रकार आर्थिक संकट और आजीविका के साधनों का समाप्त होना स्थायी प्रवास का प्रमुख कारण बना।[9]

अध्ययन के उद्देश्य

- प्रवासित जोहारी शौकाओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
- प्रवासित जोहारी शौकाओं में प्रवास के कारणों को ज्ञात करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध-पत्र में प्रवासित जोहारी शौकाओं में प्रवास के कारणों को ज्ञात करने हेतु अन्वेषणात्मक शोध अभिकल्प का प्रयोग किया गया है। अध्ययन क्षेत्र के रूप में उत्तराखण्ड राज्य के नैनीताल जनपद स्थित हल्द्वानी नगर के दमुवाढूंगा जोहार नगर वार्ड एवं दमुवाढूंगा मल्ली बमोरी वार्ड का चयन किया गया, क्योंकि इन दोनों वार्डों में जोहारी शौका परिवारों की सर्वाधिक संख्या निवास करती है। निदर्शन के लिए मतदाता सूची को आधार मानते हुए उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति का उपयोग किया गया। इन

दोनों वार्डों में निवासरत कुल 69 जोहारी शौका परिवारों के सभी वयस्क पुरुषों एवं महिलाओं को अध्ययन की इकाई माना गया, जिसके परिणामस्वरूप अध्ययन में कुल 210 उत्तरदाताओं को सम्मिलित किया गया, जिनमें 106 पुरुष तथा 104 महिलाएँ हैं। प्राथमिक तथ्यों के संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया, जबकि द्वितीयक तथ्यों के संकलन के लिए पुस्तकों, शोध-पत्रों, शोध-प्रबंधों तथा सरकारी प्रतिवेदनों का सहारा लिया गया है।

उत्तरदाताओं का पार्श्व चित्र

प्रस्तुत शोध पत्र में प्रवासित जोहारी शौकाओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करने हेतु लिंग, आयु समूह तथा साक्षरता स्तर को प्रमुख सामाजिक-आर्थिक चरों के रूप में चयनित किया गया है, इनका विवरण निम्नलिखित है।

क्र. सं.	आयु-समूह	**पुरुष**		**महिला**		**कुल योग**	
		आवृत्ति	**प्रतिशत**	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
1.	18 से 27 वर्ष	6	2.86	6	2.86	12	5.71
2.	28 से 37 वर्ष	37	17.62	37	17.62	74	35.24
3.	38 से 47 वर्ष	39	18.57	31	14.76	70	33.33
4.	48 से 57 वर्ष	11	5.24	14	6.67	25	11.90
5.	58 वर्ष एवं उससे अधिक	13	6.19	16	7.62	29	13.81
योग		106	50.48%	104	49.52%	210	100.00%

सारणी 1. उत्तरदाताओं का आयु एवं लिंग के आधार पर विवरण

सारणी 1. के अनुसार अध्ययन में सम्मिलित पुरुष उत्तरदाताओं में सर्वाधिक 18.57 प्रतिशत 38–47 वर्ष आयु-समूह के हैं, जबकि सबसे कम 2.86 प्रतिशत 18–27 वर्ष आयु-समूह के हैं। इसी प्रकार महिला उत्तरदाताओं में सर्वाधिक 17.62 प्रतिशत 28–37 वर्ष आयु-समूह की हैं, जबकि सबसे कम 2.86 प्रतिशत 18–27 वर्ष आयु-समूह की हैं। इससे स्पष्ट होता है कि अध्ययन में कार्यशील आयु-वर्ग के उत्तरदाताओं का प्रतिनिधित्व अधिक है।

सारणी 2. साक्षरता स्तर के आधार पर उत्तरदाताओं का विवरण

क्रम संख्या	साक्षरता स्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	साक्षर	210	100
2.	निरक्षर	0	0.00
योग		210	100.00%

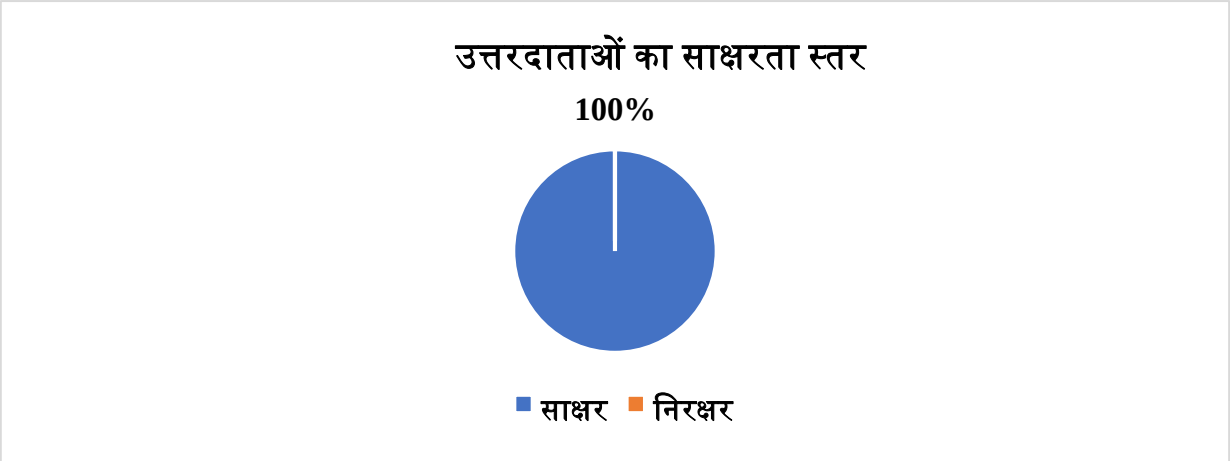

सारणी 2. से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित सभी शत प्रतिशत उत्तरदाता साक्षर हैं और यदि इसकी तुलना सामान्य जनसंख्या की कुल साक्षरता दर (72.98

प्रतिशत) से की जाए,[10] तो यह स्पष्ट होता है कि प्रवासित जोहारी शौका समुदाय का साक्षरता स्तर सामान्य जनसंख्या की तुलना में अधिक है। यद्यपि प्रवासित समुदाय की उच्च साक्षरता स्तर के पीछे भारत-तिब्बत व्यापार का समाप्त होना भी है जो उनके अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार था। जिसके समाप्त होने के पश्चात प्रवासित जोहारी शौका समुदाय ने सरकारी सेवाओं में सेवा करने हेतु शिक्षा को मुख्य आधार बनाया और जिसके परिणामस्वरूप, वर्तमान समय में प्रवासित समुदाय की साक्षरता स्तर सामान्य जनसंख्या से अधिक पाई गई है।

जोहारी शौकाओं में प्रवास के कारण

प्रस्तुत शोध-पत्र में प्रवासित जोहारी शौकाओं में प्रवास के कारणों को जानने हेतु एवर्ट ली के प्रतिकर्ष एवं अपकर्ष सिद्धांत का प्रयोग करते हुए यह जानने का प्रयास किया गया है कि वे कौन-कौन से प्रतिकर्ष कारक (Push factor) थे, जिन्होंने उन्हें बाह्य प्रवास के लिए प्रेरित किया, तथा वे कौन-कौन से अपकर्ष कारक (Pull factor) हैं, जिन्होंने उन्हें हल्द्वानी नगर की ओर अंतःप्रवास के लिए आकर्षित किया है।

सारणी 3. उत्तरदाताओं के परिवार के मूल निवास स्थान से बाह्य प्रवास का मुख्य कारण

क्रम संख्या	बाह्य-प्रवास के कारण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	तिब्बती व्यापार की समाप्ति से उत्पन्न आर्थिक संकट	204	97.14
2.	जमींदारी उन्मूलन	6	2.86
3.	स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव	0	0.00
4.	शैक्षिक सुविधाओं का अभाव	0	0.00
5.	स्थान की दुर्गमता	0	0.00
योग		210	100%

सारणी संख्या 3. से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 97.14 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने तिब्बती व्यापार की समाप्ति से उत्पन्न आर्थिक संकट को, जबकि 2.86 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जमींदारी उन्मूलन को बाह्य-प्रवास का मुख्य कारण बताया है। इससे स्पष्ट होता है कि प्रवासित जोहारी शौका समुदाय का बाह्य-प्रवास मुख्यतः ऐतिहासिक परिस्थितियों से उत्पन्न आर्थिक परिवर्तनों से संबंधित रहा है। तथा इसकी पुष्टि पांगती (1992) के कृति से होती है। पांगती के अनुसार, वर्ष 1962 के भारत-चीन युद्ध के पश्चात तिब्बत के साथ प्रवासित जोहारी शौका समुदाय का पारंपरिक तिब्बत व्यापार पूर्णतः समाप्त हो गया। चूँकि यह व्यापार प्रवासित समुदाय की पारंपरिक अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार था, इसलिए इसके समाप्त होने से उनकी आय और आजीविका के पारंपरिक स्रोत प्रभावित हुए। इसके अतिरिक्त, जमींदारी उन्मूलन ने भी प्रवासित जोहारी शौका समुदाय की पारंपरिक आर्थिक व्यवस्था को प्रभावित किया। वर्ष 1965 में लागू कुमाऊँ जमींदारी उन्मूलन अधिनियम के परिणामस्वरूप शीतकालीन ग्रामों की वह कृषि भूमि, जिसे जोहारी शौका समुदाय परंपरागत रूप से स्थानीय कृषकों को पट्टे पर देते थे, उन्हीं कृषकों के नाम दर्ज हो गई। इससे समुदाय भूमि के एक महत्वपूर्ण हिस्से से वंचित हुआ और उनकी भूमि-आधारित आय प्रभावित हुई।[11] अतः तिब्बती व्यापार की समाप्ति तथा जमींदारी उन्मूलन से उत्पन्न आर्थिक परिस्थितियों ने मूल निवास क्षेत्र में आजीविका के पारंपरिक आधारों को समाप्त किया और प्रवासित जोहारी शौका समुदाय के बाह्य-प्रवास के मुख्य प्रतिकर्ष कारकों के रूप में कार्य किया है।

सारणी 4. उत्तरदाताओं के हल्द्वानी नगर में अंतःप्रवास का मुख्य कारण

क्रम संख्या	हल्द्वानी की ओर अंतःप्रवास के कारण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	रोजगार के अवसर	210	100.00
2.	नई पीढ़ी हेतु शैक्षिक सुविधाएं	0	0.00
3.	अच्छी स्वास्थ्य सुविधाएं	0	0.00
4.	परिचितों की प्रेरणा	0	0.00
5.	पूर्व में प्रवासित क्षेत्र से व्यावसायिक संबंध	0	0.00
योग		210	100%

सारणी 4. से स्पष्ट होता है कि सभी 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने रोजगार के अवसरों को हल्द्वानी की ओर अंतःप्रवास का प्रमुख कारण बताया है। इस प्रकार, जहाँ मूल निवास क्षेत्र में तिब्बत व्यापार की समाप्ति तथा जमींदारी उन्मूलन ने समुदाय की पारंपरिक अर्थव्यवस्था को कमजोर किया, वहीं हल्द्वानी में उपलब्ध रोजगार के अवसरों ने उन्हें अपनी ओर आकर्षित किया। इस प्रकार, मूल निवास क्षेत्र की प्रतिकूल आर्थिक परिस्थितियाँ प्रतिकर्ष कारक के रूप में तथा हल्द्वानी नगर में उपलब्ध रोजगार के अवसर अपकर्ष कारक के रूप में रहे हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि प्रवासित जोहारी शौका समुदाय में प्रचलित पारंपरिक ऋतुप्रवास समय के साथ स्थायी प्रवास की प्रवृत्ति में परिवर्तित हुआ है। इस परिवर्तन के पीछे मूल निवास क्षेत्र की बदलती आर्थिक परिस्थितियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। तिब्बत व्यापार की समाप्ति तथा जमींदारी उन्मूलन ने समुदाय की पारंपरिक अर्थव्यवस्था को कमजोर किया है, जिसके परिणामस्वरूप ये परिस्थितियाँ बाह्य-प्रवास के प्रमुख प्रतिकर्ष कारकों के रूप में सामने आई हैं। वहीं, हल्द्वानी नगर में उपलब्ध रोजगार के अवसरों ने समुदाय को अपनी ओर आकर्षित किया और प्रमुख अपकर्ष कारक के रूप में कार्य किया है। इस प्रकार, प्रवासित जोहारी शौका समुदाय में स्थायी प्रवास केवल स्थान परिवर्तन की प्रक्रिया न होकर बदलती आर्थिक परिस्थितियों के प्रति समुदाय द्वारा अपनाई गई सामाजिक-आर्थिक अनुकूलन प्रक्रिया को दर्शाता है।

संदर्भ सूची

1. Bücher, K., & Morley, S. (1901). Industrial Evolution, by Carl Bücher. Tr. from the 3d German Ed. by S. MorleyWickett.

2. Bellampalli, Praveen Naik, and Yadava Neelam. "The Routes of Migration: A Multifaceted Evidences from India." Asian Social Work Journal, vol. 6, no. 2, 2 May 2021, pp. 9–19, https://doi.org/10.47405/aswj.v6i2.155. Accessed 20 May 2021.

3. Singh, V., & Jha, K. N. (2004). Migration of Tribal Women from Jharkhand: The Price of Development. Indian Anthropologist, 34(2), 69–78. http://www.jstor.org/stable/41919966

4. Migration of Tribals. Retrieved From - https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1556176&reg=48&lang=2 (Date: 27 July 2026)

5. Ministry of Tribal Affairs (MoTA), GOI. Study conducted by Disha Foundation. Situational Analysis, Gap Assessment & Future Directions in 12 States of India. Retrieved From- https://tritribal.gov.in PPT TRIBAL LIVELIHOOD MIGRATION IN INDIA (Date: 24 July 2026)

6. Lee, E. S. (1966). A Theory of Migration. Demography, 3(1), 47–57. https://doi.org/https://doi.org/10.2307/2060063

7. Read, M. (1942). Migrant labour in Africa and its effects on tribal life. International Labour Review, 45(6),605–631. https://researchrepository.ilo.org/esploro/outputs/journalArticle/Migrant-labour-in-Africa-and-its/995219480102676#file-0

8. Disha Foundation (2014), Tribal migration Research and Resource Centre, A Report

9. Benz, A. (2014). Strategic Positioning and the Reproduction of Inequality: The case of the Johari Shauka of the Kumaon Himalaya, India. Crossroads Asia Working Paper Series, No. 24. Bonn: Competence Network Crossroads Asia.

10. Census of India 2011. Retrieved from https://www.censusindia.gov.in (Date:18 December 2025)

11. Pangtey, S.S. (1992). *Madhya Himalay ki Bhotia Janjati-Johar Ke Sauka*. Takshshila Prakasan.